राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, माधोगढ़, थानागाजी, अलवर (राज.)

मुकेश शर्मा (डी), टीआर

यह विद्यालय थानागाजी से 29 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। माधोगढ़ गाँव अरावली पर्वत श्रृंखला की तलहटी में बसा है। यहाँ गुर्जर, योगी, सैन, राजपूत, रैगर, बलाई, धोबी व ब्राह्मण जातियाँ निवास करती हैं। यहाँ गुर्जर व योगी परिवारों का बोल–बाला है।

इस शाला में सभी जातियों के बालक अध्ययनरत हैं। इस गाँव का राजकीय शाला से काफी लगाव है। यहाँ ज्यादातर शिक्षक स्थानीय हैं। जो बच्चों के साथ पूरे मन से जुड़कर कार्य करते हैं।

इस शाला में 2009–10 से पायलट परियोजना के तहत सीसीई का कार्य शुरू किया गया। यहाँ शुरू में बच्चों का नामांकन 175 था तथा 5 शिक्षक कार्यरत थे। यहाँ पायलट परियोजना के तहत आ रही 40 विद्यालयों में बोध शिक्षा समिति के समर्थन से सीसीई का कार्य शुरू किया गया। बोध शिक्षा समिति के द्वारा इन विद्यालयों में 1–1 बोध के कार्मिकों को नियुक्ति दी गई। जो अकादमिक समर्थन करके सीसीई प्रभावी रूप से लागू करना था।

बोध के कार्मिक द्वारा शिक्षक, बच्चे व समुदाय के साथ मिलकर कार्य करना शुरू किया। सीसीई लागू होने के पश्चात इस शाला में जो बदलाव 4 वर्ष के अन्तर्गत देखे गए जो इस प्रकार से हैं।

यहाँ के प्रधानाध्यापक श्री हनुमान सहाय मौर्य के अच्छे प्रबन्धन व बोध के समर्थन से जो बदलाव आए वे निम्न बिन्दुओं के आधार पर देखे जा सकते हैं।

इस शाला में जिन क्षेत्रों में तुलनात्मक बदलाव आए जो इस प्रकार हैं –

क्षेत्र	पहले की स्थिति	वर्तमान स्थिति
1. सभा सत्र	• सभा में पहले प्रार्थना, प्रतिज्ञा व राष्ट्रगान किए जाते थे।	• लेकिन वर्तमान में प्रार्थना के साथ गीत, कविता, दोहे, बालगीत, चेतना गीत, राइम्स, प्रश्नोत्तरी, नाटक व अभिनय शामिल किए जाते हैं।
2. नामांकन व शिक्षकों की उपलब्धता	• इस शाला में पहले 175 का नामांकन था एवं 5 शिक्षक कार्यरत थे।	• वर्तमान समय में 350 का नामांकन है तथा 11 शिक्षक कार्यरत हैं।
3. कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाएँ	• पहले सभी बच्चों को एक साथ (पूरी कक्षा) शिक्षक द्वारा पाठ पढ़ाकर प्रश्न–उत्तर हल करवा दिए जाते थे।	• लेकिन वर्तमान में बच्चों के स्तरानुसार उपसमूह बनाकर रुचि के अनुसार टीएलएम से अध्ययन करवाया जाता है। बच्चों को स्वयं करने के पर्याप्त अवसर दिए जाते हैं।
4. शिक्षण योजना एवं समीक्षा	• पहले किसी तरह की कोई योजना नहीं बनाई जाती	• वर्तमान समय में उपसमूह वार मॉड्यूल में योजना बनाकर शिक्षण कार्य करवाया

	थी।	जाता है एवं साप्ताहिक समीक्षा भी की जाती है।
5. शाला वातावरण	• पहले शाला का वातावरण भयमुक्त था।	• लेकिन वर्तमान में शाला का वातावरण शांत व भयमुक्त है।
6. शिक्षक बच्चों का व्यवहार	• शिक्षक बच्चों का व्यवहार मधुर नहीं था।	• अब शिक्षक बच्चों का व्यवहार काफी मधुर व दोस्ताना है।
7. बिच्चों का आपसी व्यवहार	• बच्चों का आपसी व्यवहार झगडालू व गाली–गलौच से भरपूर था।	• लेकिन अब सभी बच्चे आपस में मिलकर सीखते हैं। व्यवहार दोस्ताना है। स्वअनुशासित है।
8. भौतिक स्वरूप एवं साज–सज्जा	• कमरों का अभाव था व दीवारें खाली पड़ी थी।	• अब सभी कक्षाओं के लिए कक्षा–कक्ष स्तरानुसार टीएलएम से सुसज्जित हैं।
9. सीसीई दस्तावेज़ों की स्थितियाँ	• पहले शिक्षक सीसीई से सम्बन्धित कोई काम नहीं किया जाता था।	• वर्तमान में चैकलिस्ट दर्ज़ करने, योजना एवं साप्ताहिक समीक्षा की जा रही है। • विद्यार्थी मूल्यांकन प्रगति पत्र पूरे हैं। • पोर्टफोलियो सभी बच्चों की बनी हैं जिसमें वर्कशीट जाँचकर टिप्पणी लिखी गई है। • सीसीई के सभी दस्तावेज़ पूर्ण है।
10. पुस्तकालय	• पहले पुस्तकालय का उपयोग नहीं किया जाता था। बल्कि किताबों को सुरक्षित रखा जाता था।	• लेकिन वर्तमान में पुस्तकालय का रजिस्टर डालकर बच्चों को किताबों दी जाती है।
11. शिक्षकों के साथ कार्य	• पहले शिक्षक किसी तरह का कोई लिखित कार्य नहीं करते थे। पुरानी पद्धति से ही पढ़ाते थे। • बच्चों को स्वयं करने के अवसर प्रदान नहीं करते थे। • शिक्षकों का व्यवहार बोध के प्रति नकारात्मक था। • समुदाय सम्पर्क नहीं करते थे।	• वर्तमान में सभी शिक्षक स्तरानुसार योजना बनाकर शिक्षण कार्य करते हैं तथा साप्ताहिक समीक्षा करते हैं। • बच्चों को स्वयं करने के अवसर प्रदान करते हैं। • शाला में पाक्षिक समीक्षा बैठक में उपस्थित होकर सीसीई व बच्चों के स्तर पर बातचीत करते हैं। • शिक्षकों के व्यवहार में सकारात्मक बदलाव आया है। • शाला को बेहतर बनाने का प्रयास कर रहे हैं। • समुदाय सम्पर्क करते हैं।
12. प्रधानाध्यापक के	• पहले प्रधानाध्यापक डाक व	• वर्तमान में शिक्षक (प्रधानाध्यापक)

साथ कार्य	पौषाहार को ही देखते थे।	शिक्षकों की कक्षा–कक्ष का अवलोकन करके उचित सुझाव देते हैं। • सीसीई दस्तावेज़ों की पूर्णता को समय–समय पर देखते रहते हैं। • बच्चों के शैक्षिक स्तर पर बातचीत करते हैं। • समुदाय सम्पर्क व बैठकों के लिए मदद करते हैं। • शाला में पाक्षिक समीक्षा बैठक का आयोजन लिखत रूप से करते हैं।
13. बच्चों का अकादमिक स्तर	• पहले बच्चों का शैक्षिक स्तर बहुत कम था।	• वर्तमान में बच्चों का स्तर कक्षा के अनुरुप हैं।
14. एसएमसी व समुदाय के साथ कार्य	• शाला में पहले एसएमसी व ग्राम सभा की बैठकें नहीं होती थी। केवल औपचारिकता की जाती थी। • अभिभावक शाला अवलोकन पर नहीं आते थे। • शाला के प्रति नकारात्मक सोच थी। • आय–व्यय का ब्यौरा नहीं लेते थे। • शैक्षिक स्तर नहीं पूछते थे।	• शिक्षकों के साथ मिलकर सम्पर्क किया गया। • एसएमसी व ग्राम सभा की बैठकों का आयोजन किया जाता हैं। • अभिभावक शाला अवलोकन करके उचित सुझाव देते हैं। • समुदाय की सोच शाला के प्रति सकारात्मक बनी है। • समुदाय के लोग बच्चों के शैक्षिक स्तर के साथ आय–व्यय का ब्यौरा भी लेते हैं।

शाला में उपरोक्त बदलाव कैसे आया : शाला में उपरोक्त बदलाव आया उसके कारण निम्न प्रकार हैं –

- बोध शिक्षा समिति के द्वारा लगाए गए बीआरटी के द्वारा शाला में कार्य करके बताया गया।
- प्रधानाध्यापक व शिक्षकों के साथ लगातार संवाद करना व विश्वास बनाना।
- प्रधानाध्यापक व शिक्षकों के साथ मधुर व्यवहार करना।
- बोध शिक्षा समिति द्वारा शिक्षकों का प्रशिक्षण व कार्यशालाएँ आयोजित करना।
- बीआरटी द्वारा समुदाय के साथ सतत सम्पर्क व संवाद करना एवं सोच में बदलाव करना।
- समन्वयक द्वारा कभी–कभी आकर संवाद करना।
- एसएमसी का प्रशिक्षण करना।